''उच्च माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ. रेखा सोनी
प्रोफे0 उप–प्राचार्या
गंगानगर शिक्षक प्रशिक्षण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
Email :drrkdudi@gmail.com

राजेन्द्र कुमार
शोधार्थी
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना है। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोधकार्य हेतु किया गया है। उपकरण के रूप में शिक्षक दायित्व बोध प्रश्नावली (डॉ. शशिकान्ति त्रिपाठी एवं डॉ. कल्पलता पाण्डेय), व्यावसायिक दबाव प्रश्नावली : (डॉ. मिनाक्षी शर्मा एवं डॉ. सतविन्द्रपाल कौर), मानसिक स्वास्थ्य : (डॉ. जगदीश) का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 600 शिक्षकों (कला वर्ग – 200, विज्ञान वर्ग – 200 एवं वाणिज्य वर्ग – 200) को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Random Sampling Method) द्वारा चयनित किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया है कि कला वर्ग की महिला शिक्षकों की अपेक्षा कला वर्ग के पुरूष शिक्षकों का दायित्व बोध उच्च पाया गया। उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षकों पर व्यावसायिक दबाव महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया

प्रस्तावना

शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर कर के ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है। शिक्षा मानव को मुक्ति का मार्ग दिखलाती है, शिक्षा समाज का आधार मानी जाती है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है।

जॉन डी.वी. ने ठीक ही कहा है कि जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सामाजिक या समाज के विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है, क्योंकि जन्म के समय बालक पूर्णतः असहाय होता है किन्तु धीरे–धीरे वह परिवार व समाज के सम्पर्क में आने लगता है। इस अधिकाधिक सम्पर्क में आने से उसका सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक) होता जाता है जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह सफलतापूर्वक कर पाता है। शिक्षा द्वारा ही वह महान भविष्य को संवारने की कल्पना करने लग जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति

हेतु समाज विद्यालय शिक्षा के इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सक्रिय योगदान प्रदान करता है।

विद्यालय का उद्देश्य बालकों को ऐसे अवसर प्रदान करता है जिससे उनकी समस्त जन्मजात शक्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसके अतिरिक्त उनकी प्रवृत्ति का शोधन तथा रूचियों का स्वस्थ विकास एवं परिष्कार हो सके। बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का संतुलित विकास करने की दृष्टि से विद्यालय संगठन का ध्येय उनके शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों का विकास करते हुए उन्हें इस योग्य बनाना है कि वह भावी जीवन में अपने दायित्वों का निर्वाह सफलता एवं सच्चाई के साथ कर सके तथा समाज का कुशल एवं सफल सदस्य बन सके।

शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालते हैं तथा राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमा लांघकर विश्व व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि ''शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्माता हैं।'' यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है क्योंकि निर्माता, शिक्षा पति की आधारशिला व समाज को गति प्रदान करने वाला आदि बन गया है।

समस्या के सभी आयामों को छूते हुए एक नजरिया स्थापित हुआ है कि शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती। समस्त तथ्यों पर गहराई से विचार करके एवं देश के विकास के लिए समस्त वर्गो में समानता की आवश्यकता को महत्वपूर्ण मानने के बाद शोधकर्त्ता के मन में उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य पर शोधकार्य कर सम्बन्धित समस्या के समाधान में कुछ हद तक योगदान करने का प्रयास किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

यह सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक मानवीय इकाई का कार्य लक्ष्यपरक एवं उसके निमित्त महत्वपूर्ण होता है। अतः समस्याओं का उदय मानवीय आवश्यकताओं से होता है तथा उनके समाधान का सम्बन्ध आवश्यकता पूर्ति से होता है। इसलिए कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। मनुष्य की चाहे जो क्रिया हो, लेकिन उस क्रिया का संचालन व सम्पादन आवश्यकता आधारित होता है। उक्त दार्शनिक सूत्र अक्षरशः इस शोध संकल्पना पर भी लागू होता है। यदि हम आज के परिवेश पर नजर डालें तो हमारी शिक्षक–शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था को लेकर अनेक अपेक्षाएं हैं। पुराने एवं आधुनिक शिक्षकों को देखें, शिक्षकों की गिरती गरिमा को देखें, शैक्षिक जगत में बढ़ते भ्रष्टाचार को देखें, शिक्षक व शिक्षा के गिरते मूल्यों को देखें एवं शिक्षा जगत के बदलते स्वरूप को देखें तो एक नजर में ही समझ में आ जाता है कि आज शैक्षिक जगत व शिक्षकों के व्यवहार में अनेक विसंगतियाँ हैं।

आज शैक्षिक मांगों के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था शायद परिपूर्ण नहीं दिखाई पड़ रही है। इस निमित्त आज इस बात की तीक्ष्ण आवश्यकता महसूस की जा रही है कि वर्तमान शिक्षक समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल अपना उत्पाद अर्थात् शिक्षार्थी (Out put) दे सके। साथ ही अपने वृत्ति की अंतर–आत्मा के अनुकूल उनका व्यवहार तथा परिपक्वता हो, तभी जाकर वह

अपने कार्य के प्रति ईमानदार बन पाएंगे। यदि हम प्राचीन भारतीय गुरु और आज के अध्यापक को समझ के नजरिए से देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान समाज में शिक्षक की परिपक्वता एवं प्रभावशीलता को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। साथ ही शिक्षकों के गिरते स्तर व कार्य दबावों के चलते उनके उपलब्धि स्तरों के ग्राफ भी न्यून होते जा रहे हैं।

शिक्षण एक भरण पोषण की वर्षत्ति नहीं है, बल्कि यह शिक्षकों की समाज के विकास की जिम्मेदारी शिक्षकों की अधिक है, अतः उनके संदर्भ में कोई भी गवेशणा महत्वहीन हो ही नहीं सकती, क्योंकि इसका सम्बन्ध शिक्षा एवं शिक्षकों से है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा जगत् के सम्बन्ध में कोई भी कार्य व्यर्थ व निष्फल नहीं होता। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती।

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।''

"A comparative study of responsibility sense, occupational stress & mental health of senior secondary level teachers"

दायित्व बोध

स्वामी बी.के. के अनुसार ''शिक्षकों में दायित्व बोध अपने छात्रों के प्रति समर्पित भावना है, जिसमें अपने कार्य में तन्मयता और संगठन के मूल्यों में निष्ठा तथा विश्वास निहित है।''

व्यावसायिक दबाव (तनाव)

ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार, ''दबाव एक ऐसा मनोवैज्ञानिक घटक है जो अनेक कारकों से प्रकट होता है तथा प्रभावित कारकों से प्रकट होता है तथा प्रभावित व्यक्ति को लम्बे समय तक शारीरिक व मानसिक रोगी बना देता है।'' दबाव एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो अनेक मानवीय क्रियाओं का नकारात्मक फलन है।

मानसिक स्वास्थ्य

मानसिक स्वास्थ्य का गुण उस व्यक्ति के व्यवहार में व्यक्त होता है जिसका शरीर और मस्तिश्क एक ही दिशा में साथ–साथ कार्य करते हैं। उसके विचार भावनाएँ और क्रियाएँ एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करती हैं।

उद्देश्य

अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न परिकल्पनाओं को निर्धारित किया गया है –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के बीकानेर सम्भाग (बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, गंगानगर जिलों) में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 600 शिक्षकों (कला वर्ग – 200, विज्ञान वर्ग – 200 एवं वाणिज्य वर्ग – 200) को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Random Sampling Method) द्वारा चयनित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

1. शिक्षक दायित्व बोध प्रश्नावली–डॉ. शशिकान्ति त्रिपाठी एवं डॉ. कल्पलता पाण्डेय
2. व्यावसायिक दबाव प्रश्नावली–डॉ. मिनाक्षी शर्मा एवं (1984) डॉ. सतविन्द्रपाल कौर
3. मानसिक स्वास्थ्य–डॉ. जगदीश

शोध में प्रयुक्त साख्यिकी का विवरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है – मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य

प्रस्तावना 1 :–

उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	संख्या	मध्यमान	मानक	टी मूल्य	सार्थकता अंतर	
					.05	.05
कला वर्ग के पुरूष	100	55.47	4.85	2.189	सार्थक	सार्थक
कला वर्ग की महिला	100	54.16	3.507			

$df = N_1 + N_2 - 2$

विश्लेषण :–

उपर्युक्त सारणी संख्या 1.1 में उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें कला वर्ग के पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों के दायित्व बोध से सम्बन्धित दत्तों के विश्लेषण के आधार पर मध्यमान क्रमशः 55.47 व 54.16 व मानक विचलन क्रमशः 4.85 व 3.507 तथा टी–मूल्य 2.189 प्राप्त हुआ है। जो कि टी–मूल्य के सारणी मान से अधिक है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

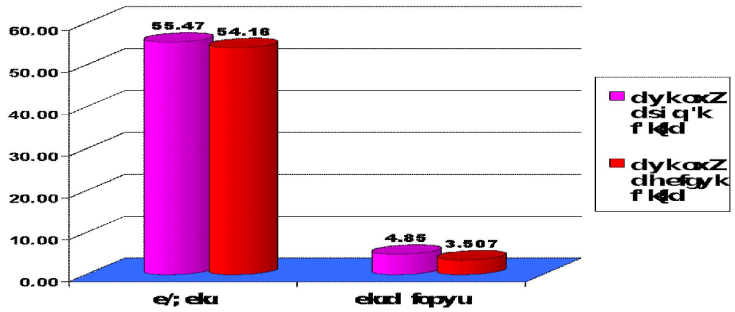

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता अंतर	
					.05	.05
कला वर्ग के पुरूष शिक्षक	100	114.0	4.54	3.032	सार्थक अंतर	सार्थक अंतर
कला वर्ग की महिला शिक्षक	100	112.2	3.977			

$df = N_1 + N_2 - 2$

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 1.2 में उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के व्यावसायिक दबाव सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें कला वर्ग के पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव से सम्बन्धित दत्तों के विश्लेषण के आधार पर मध्यमान क्रमशः 114.0 व 112.2 व मानक विचलन क्रमशः 4.54 व 3.977 तथा टी–मूल्य 3.032 प्राप्त हुआ है। जो कि टी–मूल्य के सारणी मान से अधिक है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता अंतर	
					.05	.05
कला वर्ग के पुरूष शिक्षक	100	15.23	2.256	3.42	सार्थक अंतर	सार्थक अंतर
कला वर्ग की महिला शिक्षक	100	14.2	1.995			

$df = N_1 + N_2 - 2$

विश्लेषण :–

उपर्युक्त सारणी संख्या 1.3 में उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें कला वर्ग के पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित दत्तों के विश्लेषण के आधार पर मध्यमान क्रमशः 15.23 व 14.2 व मानक विचलन क्रमशः 2.256 व 1.995 तथा टी–मूल्य 3.42 प्राप्त हुआ है। जो कि यह मान स्वतंत्रता के अंश 198 के 0.01 व 0.05 विश्वास के स्तरों पर टी–मूल्य के सारणी मान से अधिक है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

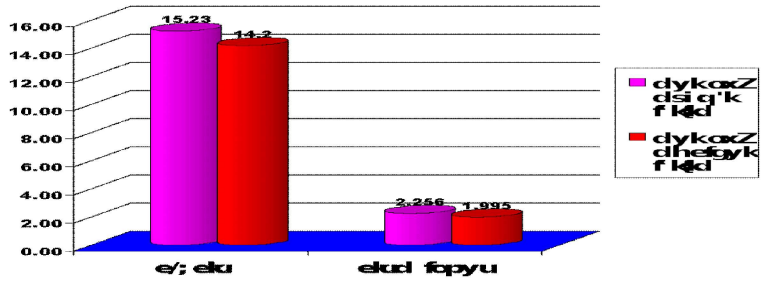

प्रस्तावना 2

उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

2.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता अंतर	
					.05	.05
विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षक	100	56.77	4.062	5.60	सार्थक अंतर	सार्थक अंतर
विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षक	100	53.74	3.575			

$df = N_1 + N_2 - 2$

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी संख्या 2.1 में उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के दायित्व बोध सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों के दायित्व बोध से सम्बन्धित दत्तों के विश्लेषण के आधार पर मध्यमान क्रमशः 56.77 व 53.74 व मानक विचलन क्रमशः 4.062 व 3.575 तथा टी–मूल्य 5.60 प्राप्त हुआ है। जो कि टी–मूल्य के सारणी मान से अधिक है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत किया जाता है।

2.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता अंतर	
					.05	.05
विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षक	100	114.1	4.316	5.191	सार्थक अंतर	सार्थक अंतर
विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षक	100	111.0	4.127			

$df = N_1 + N_2 - 2$

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 2.2 में उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के व्यावसायिक दबाव सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक दवाब से सम्बन्धित दत्तों के विश्लेषण के आधार पर मध्यमान क्रमशः 114.1 व 111.01 व मानक विचलन तथा टी–मूल्य 5.191 प्राप्त हुआ है। जो कि टी–मूल्य के सारणी मान से अधिक है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

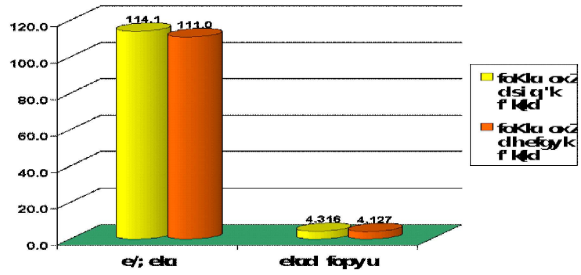

2.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता अंतर	
					.05	.05
विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षक	100	16.17	2.202	5.786	सार्थक अंतर	सार्थक अंतर
विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षक	100	14.52	1.812			

$df = N_1 + N_2 - 2$

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 2.3 में उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) के मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित दत्तों के विश्लेषण के आधार पर मध्यमान क्रमशः 16.17 व 14.52 व मानक विचलन तथा टी–मूल्य 5.786 प्राप्त हुआ है। जो कि टी–मूल्य के सारणी मान से अधिक है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

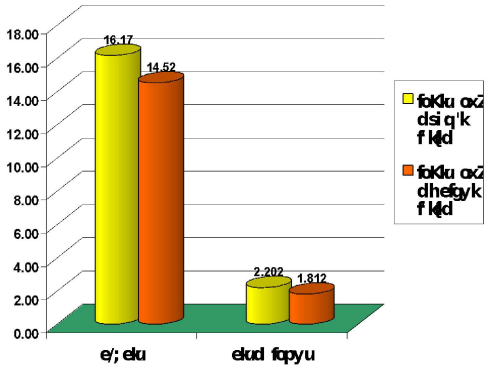

निष्कर्ष

परिकल्पना संख्या 1

1.1 कला वर्ग की महिला शिक्षकों की अपेक्षा कला वर्ग के पुरूष शिक्षकों का दायित्व बोध उच्च पाया गया।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के पुरूष शिक्षकों पर व्यवसायिक दबाव महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

1.3 कला वर्ग के पुरूष शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य कला वर्ग की महिला शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

परिकल्पना संख्या 2

2.1 विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षकों की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षकों का दायित्व बोध उच्च पाया गया।

2.2 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षकों पर व्यावसायिक दबाव महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया

2.3 विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ :–

शिक्षा जगत में निरन्तर अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को निश्चित रूप से परिभाषित करके उनके निराकरण का मार्ग दिखाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध शिक्षकों को दायित्व बोध, व्यावसायिक दबाव व मानसिक स्वास्थ्य के बारे में सोचने के लिए विवश करेगा जिससे शिक्षक और दक्ष बनेंगे।

प्रस्तुत शोध शिक्षकों की सोच बदलने में सहायक सिद्ध हो सकता है तथा जिस पेशे को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया है उसके प्रति प्रतिबद्धता उत्पन्न करने में मददगार हो सकता है।

5.6 भावी शोधकार्य हेतु सुझाव

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर प्राप्त होने वाली आर्थिक सुविधाओं पर शोधकार्य किया जा सकता है।

2. लिंग, आवास एवं सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के दृष्टिकोण में विद्यालयों के अध्यापकों को दायित्व बोध एवं व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की वृत्तिक विकास जागरूकता एवं मानसिक स्वास्थ्य का विद्यालयों के स्वामित्व के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अध्यापक साथी (जुलाई 2005) : *''स्कूल छात्रों में सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा''* राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् वॉल्यूम–1, पृ.सं. **32**
2. आचार्य, पण्डित श्रीराम शर्मा (1998) : *''अखण्ड ज्योति''*, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, अंक –5 मई, पृष्ठ संख्या **13, 14**
3. अध्यापक साथी (जुलाई 2002) : *''जीवन मूल्य–परक खेलों से जुड़े मेरे अनुभव''* राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् वॉल्यूम–2, पृ.सं. **31**
4. अणुव्रत (अगस्त 2004) : *''मूल्य संकट''* अणुव्रत महासमिति, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–2, पृ.सं. **18**